

गवाषिका = गराधिका RATNAM. im ÇKDR.
 गवाक्षिक (गव + आक्षिक) n. das tägliche Maass Futter für eine Kuh MBu. 13, 6175. 6177. 6181.
 गविज्ञात (गवि, loc. von गो, + ज्ञात) m. N. pr. eines Muni MBu. 13, 2682. 2688.
 गर्विनी (von गो) f. eine Heerde Kühe gaṇa खलादि zu P. 4, 2, 51, Vārtt.
 गविपुत्र (गवि + पुत्र) m. ein Bein. Vaiçravaṇa's MBu. 3, 15883.
 गर्विष् (गो + इष् suchend, verlangend nach) adj. brünstig; begierig, inbrünstig: श्रीगौरुधाय गविष् RV. 8, 24, 20. निरस्य रसं गविषो डुकृत्ति ते 10, 76, 7. पुवामिद्धवसे गविषः (वृषीमहे) 4, 41, 7.
 गविषं adj. dass.: इत्से दविध्रविषो न मत्रो RV. 4, 13, 2. सत्वा भरिषो गविषः 40, 2.
 गर्विष्टि (गो + 1. इष्टि) 1) adj. a) Rinder begehrend: उदावृषस्व मघवन् गविष्ट्य उद्विन्द्रामिष्ट्ये RV. 8, 30, 7. — b) brünstig, leidenschaftlich begehrend, inbrünstig: स्या पवस्व गविष्ट्य महे सोम नूचतसे। एन्द्रस्य वठरे विशा RV. 9, 66, 15. भुवत्कणवे वषा युष्पाङ्कतः क्रन्दद्दशो गविष्ट्यु 1, 36, 8. त्रिन्वा गविष्ट्ये धियः 9, 108, 10. — 2) f. a) Brunst, Begierde. Inbrunst: कुवित्सु नो गविष्ट्ये ऽग्रे संर्वोवषो रयिम् RV. 8, 64, 11. सकृन्नं शंसो उत ये गविष्ट्यो सर्वा इतो उयं पाता पित्र्यै VĀLAKH. 8, 3. RV. 10, 61, 23. — b) Kampfbegierde; Hitze des Kampfes, Gefecht: प्रुरो न धत स्याध्या गर्मस्त्योः स्वप्ः सिषासत्रायिरो गविष्ट्यु RV. 9, 76, 2. रयं युञ्जते प्रुरो न गविष्ट्यु 5, 63, 5. ये त्वाक्कित्ये मघवन्नवर्धये शोम्ब्रे, हेरिवा ये गविष्ट्यो im heissen Kampf mit Çambara 3, 47, 4 (vgl. ÇĀNKH. Çr. 8, 16, 6). अभि पृथ्य कुयवं गविष्ट्यो 6, 31, 3. 47, 20. 59, 7. 1, 91, 23. 8, 24, 5. AV. 4, 24, 5.
 गविष्ठ m. 1) die Sonne: सायं भजे दिशं पश्चाद्गविष्ठो गो (Wasser) गतस्तदा BAÛC. P. 1, 10, 36. Entweder superl. von गो Strahl oder zu zerlegen in गवि + स्थ im Wasser stehend. — 2) N. pr. eines Dānava MBu. 1, 2538. 2670. HARIV. 2285. 2287. 12695. 12942. 14288.
 गर्विष्ठिर (गवि, loc. von गो, + स्थिर) P. 8, 3, 95. m. N. pr. eines Rshi vom Geschlecht Atri's RV. 5, 1, 12. 10, 150, 5. AV. 4, 29, 5 (proparox.). ँच. Çr. 12, 14. PRAYARĀDHJ. in Verz. d. B. H. 59, 4. 60, 5. ऋ. u. Ind. St. 3, 214. 460. — Vgl. गाविष्ठिर, गाविष्ठिरायण.
 गवीधुक oder गवीधुका (H. 1179. Sch.) = गवेधुका: अनाङ्कनिर्वै ज्ञार्ति-लाश्र गवीधुकाश्च TS. 5, 4, 2, 2. — Vgl. गवीधुकयवामू unter यवागू und गावीधुक.
 गर्वीर्नि oder ०नी f. du. Bez. eines Theils des Unterleibes in der Gegend der Geschlechtstheile, etwa die Leisten: यदन्निषु गवीन्योर्धस्तावधि संश्रुतम् AV. 1, 3, 6. अस्या नार्या गवीन्योः (गवीन्याम् in der Einschlebung nach RV. 10, 184) | पुत्रमा धेहि 5, 23, 10. वि ते भिनन्म तकारो वि योनिं त्रि गवीन्यौ (wohl zu lesen ०न्यौ) TS. 3, 3, 10, 1.
 गर्वीनिका f. du. dass.: गर्वीनिके (wo TS. गवीन्यौ) AV. 4, 11, 5. य ऊद् अन्नसर्पत्यथै रति गवीनिके 9, 8, 7.
 गवोण (गो + ईण) m. Besitzer von Kühen Vop. 2, 15.
 गवीश्वर (गो + ईश्व) m. dass. AK. 2, 9, 58. H. 888. — Vgl. गवेश्वर.
 गवेडु 1) m. Wolke ÇABDAR. bei Wils. — 2) f. = गवेधु, गवेधुका AK. 2, 9, 25. Nach einem Sch. auch गवेडुका.

गवेधु f. = गवेधुका BHAR. zu AK. 2, 9, 25. H. 1179. СУÇR. 1, 196, 1.
 गवेधुका 1) m. eine Art Schlange СУÇR. 2, 263, 7. — 2) f. गवेधुका N. eines Grases, Coix barbata Roxb. Vom Vieh wird es nicht gefressen. AK. 2, 9, 25. H. 1179. वास्तव्या गवेधुकाः ÇAT. Br. 5, 2, 2. 13. 3, 1, 10. 14, 1, 2, 19. गवेधुकासक्तैवः 9, 1, 2, 8. KĪTJ. Çr. 18, 1, 1. 26, 1, 3. Nach RĪĀN. im ÇKDR. auch = नागवला Hedysarum lagopodioides Lin. (vgl. गवेशका). Vgl. गवीधुक, गवेडु, कृस्वगवेधुका. — 3) n. rothe Kreide (vgl. गवेरुक) RĪĀN. im ÇKDR.
 गवेन्द्र (गव + इन्द्र) m. P. 6, 1, 124. Besitzer von Kühen: गवेन्दो यसेश्वरः Sch. Vop. 2, 15.
 गवेरुक n. rothe Kreide TRIK. 2, 3, 6. — Vgl. गवेधुक n.
 गवेश (गव + ईण) m. Besitzer von Kühen v. l. im gaṇa संकलादि zu 4, 2, 75. Vop. 2, 15.
 गवेशका f. Hedysarum lagopodioides Lin. ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. गवेधुका.
 गवेश्वर (गव + ईश्वर) m. Besitzer von Kühen H. 888. Sch. — Vgl. जीवेश्वर.
 गवेष् (गव Rind, Kuh + I, 4. इष् oder गो + एष्), गवेष्ते leidenschaftlich begehren nach, streben nach, suchen HARISV. zu ÇAT. Br. 13, 1, 4, 3. गवेष्माणं महिषीकुलं ब्रलम् Rt. 1, 21. पुत्रं गवेष्माणः suchend SADDH. P. 4, 32, b. 33, a. Auch गवेर्षयति DuĀTUP. 35, 31. तार्कि तमाशु गवेष्प suche ihn auf KATHĀS. 24, 230. गवेष्पयन् MBu. 3, 1558. अक्षिरिव धर्मस्य पदं दुःखं गवेष्पितुम् 12, 4812. तस्मादेष यतः प्राप्तस्तत्रैवान्यो (नूपुरः) गवेष्पयताम् KATHĀS. 25, 176. गवेष्पित gesicht AK. 3, 2, 54. H. 1491.
 गवेष् (गो + 2. एष् oder von गवेष्) m. gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75.
 गवेष्ण (गो + एष्ण) 1) adj. a) brünstig, leidenschaftlich begehrend: सत्वा गवेष्णः स धृलुः RV. 7, 20, 5. स घो विदे अन्विन्दे गवेष्णो वन्धुलिद्यो गवेष्णः 1, 132, 3. इमं च नो गवेष्णं सातये सौषधो गणम् 6, 36, 5. — b) kampflustig: (उद्भूमिः) अभिमातिषाहो गवेष्णः सहमान उदित् AV. 5, 20, 11. यज्ञतो गवेष्ण एवः सन्नभि भूयसः RV. 8, 17, 15. रय 7, 23, 3. — 2) m. N. pr. eines Vrshqi MBu. 1, 6999. HARIV. 1920. 2088. 6636. Vgl. गवेष्णन्. — 3) f. स्या das Suchen AK. 2, 7, 31. — 4) n. dass.: गवो गवेष्णपरः Schol. zu RV. ANUKR. bei ROSEN zu RV. 1, 6, 5. दोषो दोषगवेष्णो R. 6, 109, 40. प्रनष्टश्च KATHĀS. 21, 85. In den letzten Bedd. von गवेष्.
 गवेष्णाय (von गवेष्) adj. suchenswerth: वस्तु SĀJ. zu ÇAT. Br. 5, 3, 1, 1.
 गवेष्णन् (गो + एष्णन्) 1) adj. suchend: तत्र सर्वे गमिष्यामो भीमार्जुन-गवेष्णाः MBu. 3, 10896. — 2) m. N. pr. eines Sohnes von Kitraka und Bruders von Prthu HARIV. 1920. 2088. Vgl. गवेष्ण.
 गवेष्णन् m. N. pr. eines Dānava HARIV. 197.
 गवेडुक (गव + एडुक) n. sg. Rinder und Schafe gaṇa गवाश्चादि zu P. 2, 4, 11.
 गवेडु s. unter उद्द.
 गव्य (denom. von गो), गव्यति Rinder (Kühe) begehren Vop. 21, 2. Davon partic. गव्यत् 1) nach Rindern (Kühen) verlangend: गौरमि वीर गव्यते RV. 6, 43, 26. 7, 32, 23. ते गव्यता (zugleich die Bed. 3.) मनसा गा येमानमद्रिमं। वि वन्तुः 4, 1, 15. गव्यतः, अथायतः, वाजयतः, जनीयतः 17, 16. — 2) brünstig, leidenschaftlich begehrend, inbrünstig: रतायामाय